B.ed 1st year Unit-2, Paper-C2

# * वर्धा शिक्षा / बुनियादी शिक्षा *

गाँधी जी ने भारतवासियों की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा की नवीन योजना प्रस्तुत की थी और तत्कालीन शिक्षा प्रणाली की कटु आलोचना करते हुए कहा था,

"यह विदेशी संस्कृति पर आधारित है और भारतीय संस्कृति को इसने पूर्णतया बहिष्कृत कर दिया है। इसका एक मात्र उद्देश्य मानसिक विकास करना है। इसका हाथों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और इसमें हाथों के कार्य का कोई स्थान नहीं है। इसमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और वास्तविक शिक्षा विदेशी माध्यम द्वारा असम्भव है।"

वर्धा शिक्षा के संस्थापक महात्मा गाँधी जी ने 22-23 अक्टूबर 1937 को वर्धा शिक्षा सम्मेलन में देश की तत्कालीन परिस्थितियों एवं नागरिकों की आवश्यकता के अनुरूप गाँधी जी ने अपने शिक्षा संबंधी निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किये, तथा इनके विचारों पर शिक्षाविदों एवं विद्वानों ने विचार विमर्श किया उसके उपरान्त निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये थे।

1. सात वर्ष के सभी बच्चों के निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।

2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।
3. हस्तशिल्प पर आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए।
4. इस पद्धति से धीरे-धीरे शिक्षक का वेतन भार निकल जाने की आशा की जानी चाहिए।
5. शिल्प का चयन बच्चों की क्षमता एवं स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर हो।

## वर्धा शिक्षा योजना अथवा बेसिक शिक्षा से तात्पर्य है

वर्धा शिक्षा योजना अथवा बेसिक शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प (Basic craft) पर आधारित होती है। इसलिए इसे अंग्रेजी में बेसिक शिक्षा (Basic Education) और उर्दू में बुनियादी तालीम अर्थात बुनियादी शिक्षा कहा जाता है, जैसा कि गाँधी जी ने स्वयं लिखा है,

"बेसिक शिक्षा बच्चों को, चाहे वे नगरों के या ग्रामों के हों, भारत में सब से सर्वोत्तम एवं स्थायी बातों से जोड़ती है।"

## बेसिक शिक्षा के उद्देश्य

1. बालकों द्वारा निर्मित वस्तुओं से विद्यालय के व्यय की आंशिक पूर्ति करना।
2. बेसिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद बालक एवं बालिका को व्यवसाय में स्वावलम्बी बनाना।
3. बालक का नैतिक विकास करना।
4. बालक को भारतीय संस्कृति के अनुरूप ढालना।
5. बालकों में प्रजातांत्रिक नागरिकता के गुणों का विकास करना।

# * बेसिक शिक्षा के सिद्धांत *

गाँधी जी ने बेसिक शिक्षा के मूल सिद्धांतों पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था,

"हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि बुनियादी तालीम देश के वातावरण में से पैदा हुई है और देश की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, यह वातावरण भारत के सात लाख गाँवों में और उनमें रहने वाले करोड़ों लोगों में छाया हुआ है, उनको भुलाकर हमारा भारत को भी खो जायेंगे, सच्चा भारत नगरों में नहीं बल्कि इन सात लाख गाँवों में बसा हुआ है।"

बेसिक शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत निम्नलिखित थे-

1. शारीरिक श्रम का सिद्धांत :-

बेसिक शिक्षा में शारीरिक श्रम को विशेष महत्व दिया गया था ताकि छात्र किसी शिल्प के लिए शारीरिक श्रम करके कुछ अर्जन करना सीखें। उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न हो और वे शारीरिक श्रम ~~करके~~ करने के लिए अभ्यस्त हो जायें।

2. स्वावलम्बन की शिक्षा (Education of self confidence) :-

बेसिक शिक्षा में छात्र को हस्त शिल्प के माध्यम से शिक्षा दी जाती है, जिससे वे किसी हस्त शिल्प में दक्ष हो जाते हैं, जो उन्हें भावी जीवन में स्वावलम्बी बनाती है।

3. परस्पर सहयोग से रहने का प्रशिक्षण (Training to live with mutual co-operation) :- बेसिक शिक्षा में छात्र परस्पर सहयोग से रहने एवं कार्य करने का प्रशिक्षण

प्राप्त करते हैं। इससे उनमें सहयोग की भावना विकसित होती है। परस्पर साथ रहने एवं सहयोग करने से बालक का समाजीकरण भी होता है।

4. हस्तशिल्प का प्रशिक्षण (Training of Handicraft) :-

बेसिक शिक्षा हस्तशिल्प आधारित शिक्षा है जिसके आधार पर अन्य विषयों की शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार बेसिक शिक्षा में बालक उपयोगी हस्त शिल्प सीखकर शिक्षा प्राप्त करता है और तदनुसार वस्तुओं का उत्पादन करना सीखता है।

5. मातृभाषा द्वारा शिक्षण (Teaching through mother Tongue)

इससे बालक अपनी मातृभाषा में सहज एवं स्वाभाविक रूप से शिक्षा प्राप्त करते हैं। इससे उनका समुचित मानसिक विकास होता है।

6. निःशुल्क शिक्षा (free Education) :-

बेसिक शिक्षा में बालकों से शुल्क नहीं लिया जाता है। इसमें बालक कुछ उत्पादन करके धनार्जन करते हैं।

## * पाठ्यक्रम *

बेसिक शिक्षा में कक्षा - 5 तक बालक एवं बालिकाओं के लिए समान पाठ्यक्रम एवं सह-शिक्षा की व्यवस्था है। इसमें सम्मिलित विषय निम्नलिखित है।

P.T.O